रमाकान्त अग्निहोत्री

कहाँ से आते हैं शब्द?

अक्टूबर 2008 के चकमक के अंक में एक छोटा-सा लेख छपा था "मासाब" के नाम से, पेज 26 पर। शायद तुमने भी ये लेख पढ़ा हो। उसका पहला वाक्य था:

"सफेद पजामा-कुर्ता पहने भीड़ में अलग-से नज़र आने वाले वे एक प्राइमरी स्कूल के मासाब थे।"

एक हिन्दी पत्रिका में छपा यह हिन्दी का एक वाक्य है। तुम्हें क्या लगता है कि इसके शब्द कहाँ से आए होंगे?

बहुत सालों तक हम पर तुर्कियों, अरबियों, इरानियों, मुगलों व अँग्रेज़ों ने राज किया – लगभग छठी शताब्दी से लेकर 1947 तक। आपस में कई चीज़ों का लेन-देन हुआ। इस लेन-देन में हमने तुर्की, अरबी, फारसी व अँग्रेज़ी से कई शब्द भी ले लिए। यह होने के लगभग 2500 साल पहले से यहाँ संस्कृत, प्राकृत, पाली आदि का राज था। कई शब्द वहाँ से भी लिए – कुछ वैसे ही और कुछ थोड़े बदल कर।

तो कोई हैरानी नहीं होनी चाहिए कि ऊपर लिखे हिन्दी के वाक्य में "सफेद" और "पजामा" फारसी से हैं, "कुर्ता" तुर्की से, "भीड़" प्राकृत से, "नज़र" अरबी से और "प्राइमरी", "स्कूल" व "मासाब" तो अँग्रेज़ी से हैं ही – सीधे-सीधे वैसे ही या कुछ बदले-बदले!

कई बार शायद तुम्हारे "मासाब" भी कहते हों:

तुम कैसी हिन्दी बोलते और लिखते हो बेटे। कभी बीच में गोंडी शब्द ले आते हो। कभी बुन्देली तो कभी मराठी, पंजाबी। और कई बार तो तुम अँग्रेज़ी शब्द भी मिला देते हो अपनी हिन्दी में। शुद्ध भाषा बोलने व लिखने की कोशिश करो।

कितनी अजीब बात है कि तुम्हें उन शब्दों का प्रयोग करने के लिए मना किया जाता है जो तुम्हारी रोज़मर्रा की भाषा का हिस्सा हैं। क्या करें, यह दुनिया कुछ ऐसी ही है। दूसरों की मर्ज़ी के कपड़े पहनो, दूसरों की मर्ज़ी का खाना खाओ, दूसरों के हिसाब से स्कूल जाओ...।

क्या ऐसा है कि किसी भी भाषा में सारे या अधिकांश शब्द उसी भाषा के होते हैं? क्या हिन्दी में सारे शब्द हिन्दी के ही हैं? यह तो ठीक है कि आज वो हिन्दी के हो गए हैं, जैसा कि तुमने अभी ऊपर देखा।

वास्तव में, हर भाषा में ज़्यादातर शब्द कहीं ना कहीं से उधार ही लिए जाते हैं। बहुत कम शब्द ऐसे होते हैं जो कोई भाषा आजकल खुद बनाती है। सच तो यह है कि वही भाषा फलती-फूलती है जो अपने घर के दरवाज़े खुले रखती है। जिस दिन हम दरवाज़े बन्द करने शुरू कर देते हैं उस दिन हमारी भाषा मरने-सी लगती है।

अब देखो ना हर रोज़ इस्तेमाल होने वाले हज़ारों हिन्दी शब्द अन्य भाषाओं से लिए गए हैं। क्या "दरवाज़ा", "किताब", "वकील", "बीमार", "गिलाफ", "कुर्सी", "जासूस" आदि हिन्दी के शब्द हैं? ये शब्द हमने अरबी भाषा से लिए हैं। यह एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। इसी तरह "चाकू", "कुर्ता", "तोप", "कुली" आदि शब्द तुर्की भाषा से लिए हैं और "बाज़ू", "आज़ादी", "चम्मच", "जान" आदि फारसी से। "अलमारी", "बालटी", "कमरा", "मग", "गुसलखाना", "रिक्शा", "कोट", "गीत" – इन शब्दों के बारे में तुम्हारा क्या ख्याल है? यह तुम्हारी माथापच्ची के लिए है।